उपसंहार

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में सूर्यबाला के नाम को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। समकालीन महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला का नाम बड़े ही आदर और सम्मान से लिया जाता है । सूर्यबाला केवल उपन्यासों एवं कहानी की विधा तक सीमित नहीं हैं बल्कि उन्होंने अपनी कलम का जादू व्यंग्य साहित्य और बाल साहित्य में भी चलाया है । सूर्यबाला अपने लेखन के माध्यम से गद्य की सभी विधाओं में समाज की हर समस्या को समय के साथ-साथ आगे बढ़ाने का कार्य करती हैं और सभी समस्याओं को एक प्रखर लेखक के रुप में समाज के सामने रखती हैं । सूर्यबाला को गद्य साहित्य का अध्ययन करते हुए ही हमें उनके द्वारा रचित कृतियों में ही उनके जीवन के अनुभवों, विचारों, मनोभावों का परिचय प्राप्त हो जाता है । सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों, कहानियों, व्यंग्य साहित्य एवं बाल-रचनाओं में समाज को, उनकी समस्याओं को और एक आम मनुष्य के जीवन को ध्यान में रखते हुए अपनी कृतियों में इन्हें सहज रुप से उजागर किया है । उनकी रचनाओं का अध्ययन करतके समय ऐसा लगता है कि उन्होंने समाज के हर पहलूओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है चाहे वह निम्न वर्ग हो, उच्च वर्ग हो या मध्यम वर्ग हो सभी वर्गों को अपने साहित्य में स्थान दिया है तथा उनसे जुड़े हे तथ्यों को पाठकों के सामने सहज रुप से प्रस्तुत किया है ।

सूर्यबाला ने हिंदी साहित्य में अब तक पाँच उपन्यासों की रचना की है । (छठा उपन्यास 'कौन देश को वासी' जिसका समावेश मेरे शोध आलेख में नहीं किया गया है) जो हिंदी साहित्य में काफी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं । विभिन्न कहानी संग्रहों, व्यंग्य लेखों, बाल रचनाओं का निर्माण करके साहित्य के क्षेत्र में अपने आप को एक बहुआयामी लेखिका के रुप में प्रस्थापित कर दिया है । मुझे तो सूर्यबाला जी में हर क्षेत्र में पदार्पण करने वाली कुछ गिनी-चुनी लेखिकाओं में सूर्यबाला जी एक मजबूत पक्ष रखते हुए नज़र आती हैं । उनकी रचनाओं ने मेरे

स्वयं के मनोभावों को प्रभावित किया है । मैंने सूर्यबाला द्वारा रचित कृतियों का स्वयं अध्ययन किया है और उनकी साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन करते हुए मुझे उन्हीं पुस्तकों में से उनकी रचनाओं का अध्ययन करते-करते उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय प्राप्त हुआ । उनके व्यक्तित्व को मैंने उनके यु-ट्यूब पर कई विडीयो साक्षात्कार आदि को निहारा और सुना जिससे मुझे उनके व्यक्तित्व को जानने एवं समझने में सहायता प्राप्त हुई । फेसबुक, गूगल, व्हाट्सएप के द्वारा और स्वयं उनसे ई-मेल, वॉइस कॉल के द्वारा संपर्क किया तथा उनके व्यक्तित्व विषयक जानकारियाँ प्राप्त कीं । प्रथम अध्याय के अंतर्गत मैंने सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यासों, कहानियों, व्यंगय् रचनाओं, बाल साहित्यिक रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया है ।

सूर्यबाला को अपने परिवार से ही लेखन की प्रेरणा प्राप्त हुई थी जिसके तहत सूर्यबाला जी ने अपनी पाठशाला की पत्रिका में 'क्षमादान' नामक कहानी लिखी थी । इसके पश्चात् उनकी कविता 'मोमबत्ती के आँसू' नामक कविता का प्रकाशन 'आज' नामक साप्ताहिक में प्रकाशित हुई । बस उनका साहित्यिक सफ़र इसी दौरान शुरु हो गया था । इस साहित्यिक प्रवास में उनके परिवार का बहुत बड़ा योगदान हम देख सकते हैं । सूर्यबाला के पिताजी शिक्षा संस्था में अधिकारी थे जिसके कारण सूर्यबाला जी के घर पर हमेशा पुस्तकों का ढेर लगा रहता था और सूर्यबाला इन्हीं पुस्तकों का अध्ययन कर लिया करती थीं जिसके कारण उनकी साहित्यिक रुचि इसी काल दौरान बढ़ी होगी ऐसा मुझे लगता है । सूर्यबाला जी के पिता का देहांत जब वे छठी कक्षा में पढ़ती थीं तभी हो गया था । ऐसी परिस्थितियों में सूर्यबाला की माँ ने सारी विकट परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने पूरे परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठा ली । मुझे लगता है इसका ही नतीजा है कि सूर्यबाला को सबसे अधिक बल और प्रेरणा अगर कहीं से मिली हो तो वो उनकी माँ ही होगी क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में भी सूर्यबाला ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और एम.ए., पीएच.डी. जैसी उच्चतम पदवी प्राप्त की और

आज भी सूर्यबाला अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी हिंदी साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं ।

द्वितीय अध्याय में उपन्यास के उद्भव और विकास की यात्रा का संपूर्ण विवरण दिया गया है जिसमें उपन्यास का अर्थ, परिभाषा और उपन्यास की विकास यात्रा में प्रेमचंद पूर्व युग में हिंदी उपन्यास, प्रेमचंद युग के हिंदी उपन्यास, प्रेमचंदोत्तरयुग के हिंदी उपन्यास और आधुनिक युग का परिचय दिया गया है । उसके पश्चात् कहानी का उद्भव एवं प्रसाद युग, उत्तर प्रेमचंद युग, स्वातंत्र्योत्तर हिंदीकहानी, साठोत्तरी कहानी, अखहानी, आंचलिक कहानी, सचेतन कहानी, समांतर कहानी आदि को ध्यान में रखते हुए कहानी के उद्भव और विकास को दर्शाया गया है । इसी अध्याय के अंतर्गत आने वाले व्यंग्य के उद्भव एवं विकास में संत-साहित्य से व्यंग्य का आरंभ, मध्यकाल की सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य शैली का प्रहार, कबीर के द्वारा समाज, धर्म पर किये जाने वाले व्यंग्य को भी दृष्टिगत किया है । भक्तिकाल में भी कवि अपनी बात को अच्छे प्रभावी ढंग से रखने के लिए व्यंग्य का ही प्रयोग करते थे । रीतिकाल में कवि केवल राज दरबारों में राजाओं को खुश करने में ही लगे रहते थे । इस काल में कम ही व्यंग्य रचनाओं की प्रस्तुति देखने को मिलती है । केवल बिहारी सतसई और घनानंद के दोहे में व्यंग्य प्रतीत होता है । स्वतंत्रता पूर्व युग में प्रेमचंद ने उपन्यासों, कहानियों में आम मनुष्य के जीवन की अनेक समस्याओं को व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त किया है । स्वातंत्र्योत्तर युग में लोग आज़ादी के बाद देश में खुशहाली के सपने देख रहे थे पर राजनीतिक दूरदर्शिता के कारण सामान्य मनुष्य के सारे सपने आज भी हमें अधूरे देखने को मिलते हैं । स्वतंत्रता के बाद समाज में अनेक विसंगतियों और सामाजिक, नैतिक मूल्यों का ह्रास होते हुए देखा गया । इस काल में परसाई की रचनाओं में ही भारत की यथार्थ स्थितियों का व्यंग्यात्मक वर्णन देखने को मिलता है । आधुनिक काल में भारतेन्दु को हम इस काल का मुख्य

सूत्रधार कहें तो कोई दो राय नहीं है, क्योंकि उनकी कहानियों, नाटक, निबंध और काव्य विधा में व्यंग्य का प्रयोग दृष्टिगत होता है ।

बाल साहित्य के उद्भव एवं विकास यात्रा में हिंदी साहित्य में बाल साहित्य एक नवीन विधा है । बाल साहित्य लेखन का प्रारंभ नारायण पंडित की पंचतंत्र की कहानियों में मिलता है । बचपन में हमारे दादा-दादी और माता-पिता हमें मनोरंजन के लिए कहानियाँ सुनाया करते थे जिसके माध्यम से बच्चों में सत्य, यथार्थ जैसी बातों की शिक्षा मिलती है जो कभी साहस, बलिदान, त्याग और परिश्रम जैसे गुणों का बीज भी बोते हैं । वीरगाथा काल में प्राप्त बाल साहित्य में बहुत हीकम जानकारी प्राप्त है जिसमें मुकरियाँ, पहेलियाँ, प्रश्नों के माध्यम से बच्चों को मनोरंजन, खेल करवाया जाता था । जगनिक का 'आल्हा गीत' और अमीर खुसरो की पहेलियाँ भी लोकप्रिय थीं । भक्तिकाल में हमें सूरदास, तुलसीदास, कबीर ने बच्चों के मानस पटल पर अपने दोहों के माध्यम से मूल्यों का रोपन करने का प्रयास किया । सूरदास ने अपने साहित्य में कृष्ण की बाल-लीलाओं का सुंदर और चेतनात्मक वर्णन किया है । तुलसीदास की साहित्यिक रचना 'रामचरितमानस' में श्री राम का बाल वर्णन अत्यंत मनमोहक रुप से देखा जा सकता है । रीतिकाल में भूषण, गिरधर, रहीम का बाल साहित्य आज के साहित्य में विशिष्ट महत्त्व रखता है । इस काल में मूल्यपरक दोहे हमारा मार्गदर्शन करते हैं । आधुनिक काल में बाल साहित्य को दो कालखंडों में बाँटा गया है । आज बाल साहित्य पूरे विश्व में अपने उच्चतम शिखर पर है । इस काल में पद्य-गद्य दोनों विधा में बाल साहित्य को महत्त्व दिया गया है जिसमें 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नाटक, लोरी, चूर्ण का लड़का आदि रचनाओं ने छोटों के साथ-साथ बड़ों को भी मनोरंजन प्रदान किया है । रामनरेश त्रिपाठी का बाल अधिकार के रुप में उनके कार्य की सराहना हुई है । भारतेन्दु काल को हिंदी साहित्य बाल साहित्य जागरण का काल भी कह सकते हैं जिसे द्विवेदी काल और समृद्ध कर देता है । गद्य का उद्भव होने के साथ ही बाल साहित्य में बाल कहानी,

बाल उपन्यास, बालनाटक आदि का निर्माण बीजली की गति से आगे बढ़ रहा है जो आज के आधुनिक बच्चों की जीवन शैली, मानस पटल, विकास पर असर करता है जो देश के बच्चों के भविष्य का निर्माण करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है ।

समकालीन महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला एक प्रखर लेखिका के रुप में दृष्टिगत होती हैं । सूर्यबाला द्वारा रचित उफन्यास 1) सुबह के इंतजार तक, 2) अग्निपंखी, 3) दीक्षांत एवं 4) मेरे संधिपत्र, 5) यामिनी कथा का समावेश होता है । सूर्यबाला के उपन्यास 'अग्निपंखी' में दो लघु उपन्यासों का समावश हुआ है । दूसरा है 'सुबह के इंतजार तक' । अग्निपंखी हमारे गाँव की अभिशप्त पीढ़ी की कथा है जो मूल वास्तविक रुप को खो चुकी है और जीवन की विभिन्न विषम परिस्थितियों से गुजर रही है । यह एक गाँव के पढ़े-लिखे युवक जयशंकर और उसकी माँ जीजी की कथा है जो अपने पति के देहांत के बाद से ही परिवार, समाज और जीवन से समझौता करती दिखाई देती है । अपने बेटे के लिए संघर्षमय जीवन को भी बड़ी सहजता से गुजारती है । यहाँ जीजी, जयशंकर दोनों ही पात्र मध्यमवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए देखे जा सकते हैं । दूसरा उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक' में मानु के पात्र पर बलात्कार जैसी संगीन घटना घटने के बाद भी वह अपनी परिस्थितियों से लड़ते हुए समाज में अपने आपको स्थापित करती है । न केवल स्वंय के लिए परंतु अपने भाई के उज्जवल भविष्य के लिए भी निरंतर प्रयास करती रहती है और उसे सफलतापूर्वक डॉक्टर बनाती है । 'अस्सी के दशक में प्रस्तुत यह उपन्यास स्त्री-विमर्श को भई पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है । सूर्यबाला ने दोनों उपन्यासों का निर्माण करते समय उपन्यास के तत्वों काबड़ी ही सहजता के साथ पालन किया है । उपन्यास की भाषा सामान्य जनमानस को समझ आये ऐसी है । पात्र, प्रसंग, देशकाल भी कहानी के अनुरुप ही दृष्टिगत हैं जो पाठकों के सामने दृश्यात्मक रुप से नज़र आते हैं ।

सूर्यबाला के उपन्यास 'यामिनी कथा' में चंद्रकांत बंदीवडेकर ने सूर्यबाला को प्रतिष्ठा एवं सार्थकता प्रदान करने वाली लेखिका माना है । 'यामिनी कथा' उपन्यास में एक मध्यमवर्गीय महिला की मानसिक कश्मकश को, पीड़ा को दर्शाया है । इस उपन्यास में यामिनी जैसे पात्र को विभिन्न रुपों में प्रस्तुत किया है । यामिनी एक संवेदनशील स्त्री है जिसके जीवन में सुख-सुविधाएँ कम ही हैं मगर दुःख, पीड़ा का पहाड़ उसके जीवन में हमेशा बना रहता है । मुझे मूल्यांकन करते समय ऐसा लगा कि कुछ तो इस उफन्यास में पीछे छुटा है जो अधूरा है, जिसे सूर्यबाला को मुक्त रुप से पाठकों के सामने प्रस्तुत करना चाहिए था । यामिनी कथा का मराठी भाषा में भी अनुवाद किया गया है । उपन्यास के संवाद पाठकों को उपन्यास में दिलचस्पी बढ़ाते हैं । देशकाल एवं भाषा शैली को देखें तो पात्रों पर शहरी जीवनशैली का प्रभाव साफ़ दिखता है । भाषा भी शहरी है जो पाठकों से सीधा संपर्क करती है । इस उपन्यास में सूर्यबाला ने विधवा यामिनी की संघर्षमय मनोव्यथा को, पीड़ा को व्यक्त किया है ।

'मेरे संधिपत्र' सूर्यबाला द्वारा रचित प्रथम उपन्यास है जो धारावाहिक के रुप में भी प्रस्तुत हो चुका है । यह मध्यमवर्गीय पढ़ी-लिखी नारी से उच्चवर्गीय विधवा का जीवन जीते हुए शिवा की जीवनयात्रा को प्रस्तुत करता है जो सामान्य स्त्रियों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत के रुप में कार्य करती है । मेरे संधिपत्र कहानी में हमें शिवा के अनेक रुप देखने को मिलते हैं। 'दीक्षांत' उपन्यास का नायक डॉ. विद्याभूषण शर्मा है जो शिक्षा के क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार, राजनीति का शिकार हो जाता है । दीक्षांत उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जिसमें एक अस्थायी रुप में विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाला शिक्षक अंत तक स्थायी जीवन जीने के लिए नौकरी में भी स्थायित्व चाहता था जिससे उसके घर के आर्थिक हालात सुधर सकें । परंतु नियती ने उसका यह सपना बड़ी बेरहमी से तोड़ा हो ऐसा लगता है । अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए डॉ. शर्मा अंत तक लड़ते हैं परंतु इस समाज

की व्यवस्था में चल रहे दुराचार, अनीति, नियमों का उल्लंघन, भ्रष्टाचार से आखिर में जंग हार जाता है और अपने जीवन का अंत स्वयं ही कर लेते हैं ।

सूर्यबाला ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा को न केवल उपन्यासों में बल्कि कहानियों में भी मनवाया है । सूर्यबाला की कहानियों में उच्चवर्गीय, मध्यमवर्गीय, आदर्श विचारधारा, शहरी जीवन शैली, स्त्री-विमर्श, मूल्य रोपन, राजनीतिक आदि कई पहलूओं पर प्रकाश डाला है । सूर्यबहाला की कहानियों का विस्तार 'धर्मयुग' पत्रिका के माध्यम से हुआ । सूर्यबाला की विचारधारा पूर्ण रुप में प्रखर और प्रभावशाली है । सूर्यबाला की कहानियों में देश-विदेश, शहर-गाँव की संस्कृतियों का भी दृश्यात्मक वर्णन देखने मिलता है । सूर्यबाला की भाषा शैली एक विशिष्ट गुण है जो स्वयं पाठक को अपनी कहानी लगती है । जिसमें अंग्रेजी, पंजाबी, मराठी, ब्रज, भोजपुरी, मुंबईया, कलकत्ती कई भाषाओं के उदाहरण हम उनकी कहानियों में देख सकते हैं जिससे उन्हें भाषा का कितना व्यापक ज्ञान है यह पता चलता है। सूर्यबाला की 'रेस' कहानी पुरानी है परंतु नये विचारों को लेकर आगे बढ़ती है । 'मानुष गंध' कहानी विदेश में रह रहे लोगों की देश के प्रति उनके मन में जो देशप्रेम की भावना है उसे दर्शाया गया है । 'माय नेम इज़ तात' जैसी कहानी शहरों में नौकर करने वाले दंपती की बेटी कैसे भावनात्मक स्तर पर पीड़ा का सामना करती है; 'गृहप्रवेश' कहानी में देश में हो रहे दंगों, गुंडागर्दी आदि को बड़े ही स्पष्ट रुप से दर्शाया गया है । 'मातम' कहानी में साइंटिस्ट के मरने के पश्चात उसकी पत्नी को कैसे समाज पीड़ा देता है उसका उदाहरण प्रस्तुत किया है । स्त्रियों को केंद्र स्थान पर रखकर सूर्यबाला ने कई कहानियों को लिखा है जिसमें उन्होंने स्त्री-विमर्श, स्त्री सशक्तिकरण पर अधिक जोर दाय है । साथ ही कहानियों के संवादों में उपयुक्त भाषा शैली में अंग्रेजी, हिंदी, मुंबई की भाषा, छोटे-बड़े संवाद, कहावतें, मुहावरे, शहरी भाषा का प्रयोग किया है । कहानी के पात्र पाठक के मन पर गहरा प्रभाव डालने में और पाठकों के साथ मानसिक संबंध स्थापित करने में कामयाब हुए हैं । हर कहानी को सूर्यबाला ने किसी न

किसी उद्देश्य से लिखा है ऐसा प्रतीत होता है जिसके माध्यम से समाज को प्रेरणा, नई दिशा प्राप्त होती है ।

हिंदी साहित्य में सूर्यबाला ने उपन्यास, कहानी के अलावा महिला साहित्यकारों में से व्यंग्य साहित्य में भी बड़ी दृढ़ता से कदम रखा क्योंकि व्यंग्य ऐसी विधा है जिसमें साहित्य रचना करने के लिए काफी हिम्मत और जीगर की आवश्कता है परंतु सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से अपने आप को एक प्रखर लेखिका के रुप में स्थापित किया है। महिला साहित्यकारों का बड़ा ही कम योगदान है व्यंग्य साहित्य में परंतु सूर्यबाला ने इस विधा में पदार्पण करके अपनी पकड़ मजबूत बना ली है । सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाओं में 'धृतराष्ट्र टाइम्स', 'अजगर करे न चाकरी' में अपनी व्यंग्य रचनाओं को संग्रहित किया है । सूर्यबाला ने समय, समाज और जीवन की सभी विसंगतियों को अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से पाठकों को परिचित करवाया । सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाएँ सरल-सहज, गुणवत्ता से भरी हैं जिसके सामने बड़े-बडे व्यंग्यकार अपना लोहा मानते हैं । सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में बड़ी ही सोच और समझ का परिचय देते हुए राजनीतिक, साहित्यिक विसंगतियों को पाठकों के सामने उजागर किया है । इसी बात से आप सूर्यबाला की लेखन शैली का अंदाजा लगा सकते हैं । व्यंग्य की सबसे बड़ी खूबी यह होती है कि साहित्य के माध्यम से लेखक अपने मन के छुपे भावों को बड़ी नीडरता के साथ प्रकट कर सकता है । किसी भी व्यक्ति, धर्म, समाज, समस्या को अपने निशाने पर लेकर उसको छलनी कर सकता है । सूर्यबाला ने व्यंग्य को एक नये प्रकार से नये लहजे में पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है । सूर्यबाला द्वारा रचित 'प्रभु, तुम डॉलर मैं पानी' में भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति में अंतर बताते हुए प्रहार किया है । महिला, हिंदी भाषा, राजनैतिक व्यंग्य, सामाजिक समस्याओं, मूल्यों का ह्रास होता है । समाज के हर ज्वलंत प्रश्न पर व्यंग्य के माध्यम से विरोध प्रकट किया जा सकता है । व्यंग्य में सूर्यबाला ने मैं (हम) शैली का प्रयोग किया है वह प्रगट होता है ।

सूर्यबाला का समाज के प्रति जो दृष्टिकोण है वह प्रगट होता है । सूर्यबाला की रचनाओं को विभिन्न भागों में बाँटा जा सकता है जैसे साहित्यिक व्यंग्य रचनाएँ, राजनीतिक व्यंग्य रचनाएँ, सामाजिक विसंगतियों पर आधारित व्यंग्य रचनाएँ, नारी जीवन की समस्याओं पर आधारित व्यंग्य रचनाओं का समावेश होता है ।

सूर्यबाला द्वारा रचित व्यंग्य रचनाओं में हम उनकी प्रगतिशील, सकारात्मक विचारधारा, उनके द्वारा नैतिक मूल्यों का ध्यान रखना, उनका गहन चिंतन, पात्रों का चयन एवं समाज का पतन, उनकी भाषा शैली, आलोचना, बौद्धिकता का परिचय उनकी व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन करते समय देखने को मिलता है ।

सूर्यबाला ने बाल साहित्य में बच्चों की मानसिकता को उनके क्रियाकलापों को ध्यान में रखते हुए बाल रचनाओं का निर्माण किया है । जिसमें सूर्यबाला ने बड़े ही मनोरंजक तरीके से साहित्यिक रचनाओं में बालकों में उत्सुकता, रचनात्मक प्रवृत्ति, उपार्जन प्रवृत्ति, आत्मदर्शन की प्रवृत्ति, द्वंद्व की प्रवृत्ति, विनय की प्रवृत्ति, स्पर्धा की प्रवृत्ति, उनकी जिज्ञासा, कल्पनाओं को बड़े ही सहज रुप से विस्तृत एवं बालकों की भाषा में ही उजागर किया है । सूर्यबाला की रचना 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' में बच्चों की आदतें, माता-पिता के व्यवहार को अपनी कहानियों के रुप में पाठकों के सामने बड़े ही भावनात्मक रुप से रखा है । क्योंकि बच्चे देश की संपत्ति हैं उनमें मनोरंजन के साथ-साथ मूल्यों का रोपन होना भी आवश्यक है तभी हम अपने देश की आगे की पीढ़ी को एक सशक्त नागरिकों की पीढ़ी के रुप में देख सकते हैं । सूर्यबाला ने जिन बाल रचनाओं का समावेश इस संग्रह में किया है उनमें बालचित्रों का, मनमोहक चित्रों का, शब्दों, वाक्यांशों का, भाषा का बड़ा ध्यान रखा है।

सूर्यबाला ने बाल रचनाओं में बाल साहित्य के उद्देश्यों को भली-भाँति जानकर, समझकर अपनी रचनाओं का निर्माण किया है । आज के बालक कल के भारतभूमि के निर्माता हैं । बच्चे जैसे साहित्य का अध्ययन करेंगे उनमें वैसा ही

बीजारोपन होगा । इसलिए सूर्यबाला ने बच्चों को शिक्षा प्रदान करते हुए उनके सुदृढ चरित्र के निर्माण की भावना से अपनी बालरचनाओं को बड़े ही बालमोहक रुप से प्रस्तुत किया है ।

सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यासों, कहानियों, व्यंग्य रचनाओं, बाल साहित्य में सूर्यबाला ने अनेक समस्याओं को पाठकों के सामने उजागर किया है । समाज और परिवार को माध्यम बनाकर समाज में व्याप्त समस्याओं जैसे गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में फैला भ्रष्टाचार, युवाओं में मानसिक समस्या, पारिवारिक समस्या, नारी जीवन की समस्या, बलात्कार की समस्या, तलाक की समस्या, बाल मजदूरी की समस्या, दहेज की समस्या, शहरीकरण की समस्या, मूल्य विघटन की समस्याओं के अंतर्गत प्यार, विश्वास, कर्तव्यपरायणता, दया, ममता, सत्य, त्याग आदि को अपने उपन्यास के पात्रों, कथावस्तु, भाषा शैली, जीवन शैली, उनके व्यवहार, रहन-सहन के माध्यम से बड़े ही सहज रुप से प्रखर भाषा को माध्यम बनाकर समस्याओं को उजागर किया है ।

सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए कहानी में कई समस्याओं को सहज रुप से प्रकट कर दिया है । सूर्यबाला हिन्दी साहित्य में एक चमकता हुआ सितारा है । कहानी चाहे गरीब को हो, मध्यमवर्गीय परिवार की हो, उच्च समाज से संबंधित हो, किसान की, मजदूर की हो, सूर्यबाला ने उतनी ही सहजता के साथ हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए कहानी के पात्रों के माध्यम से संवेदनशीलता लिए हुए कई बड़ी-बड़ी समस्याओं को उजागर कर दिया है । सूर्यबाला की कहानियों की यह खासियत है कि उनकी कहानियाँ बहुत ही शांत तरीके से राग-विराग रचती हैं । 'रहमदिल', 'न किन्नी न', 'दस्तावेज', 'आदमकद', 'दादी और रिमोट' आदि कहानियाँ पाठकों के मन को भा जाती हैं और ऐसी कहानियों के माध्यम से सूर्यबाला ने भारतीय संस्कृति, समाज, समाज की अनेक समस्याओं का अपनी कहानियों के माध्यम से यथार्थ स्वरुप उजागर किया है । जिसके अंतर्गत नारी जीवन की समस्या, आर्थिक

समस्या, वृद्धों की समस्या, सांप्रदायिक दंगों की समस्या, मूल्यविघटन की समस्या को प्रखर भाषा शैली के माध्यम से व्यक्त किया है ।

कहानी के साथ-साथ सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं, बाल साहित्य में भी कई समस्याओं को अपने साहित्य के माध्यम से दृष्टिगत किया है । अपने व्यंग्य बाणों के माध्यम से सूर्यबाला ने भ्रष्टाचार की समस्या, राजनीतिक समस्या, बेरोजगारी की समस्या, स्त्री-शोषण की समस्या, विदेश पलायन की समस्या, राष्ट्रभाषा हिंदी की समस्या और कई अन्य समस्याओं को अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से पाठकों के सामने रखा । बाल साहित्य में भी सूर्यबाला ने विशेष ध्यान रखते हुए सहज ढंग से प्रस्तुत किया है । अपनी बाल रचना में सूर्यबाला ने 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' में बच्चों की सहज प्रवृत्तियों को माध्यम बनाकर कई समस्याओं को हमारे सामने प्रकट किया है जिसके अंतर्गत बच्चों में एख दूसरे को चिढ़ाने की समस्या, बच्चों में गलत अनुकरण की समस्या, लिंगभेद की समस्या, बच्चों को मारने-पीटने की समस्या, बच्चों में लालच की समस्या, बच्चों में चुगलखोरी की समस्याओं को बाल-सुलभ भाषा में प्रस्तुत किया है ।

हिंदी महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला ने अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है । आज सूर्यबाला एक बहुमुखी लेखिका के रुप में प्रतिष्ठित हैं । उनकी साहित्यिक यात्रा पाठकों को सोचने, समझने, मूल्यांकन करने, ज्ञानवर्धकता बढ़ाने का कार्य करती है । हिन्दी साहित्य में एक उपन्यासकार, व्यंग्य रचनाकार, कहानीकार, बाल साहित्यकार के रुप में अपने आप को रखा है । संक्षेप में अगर हम कहें तो समकालीन महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला ने अलग-अलग विधा में बड़े ही सशक्त रुप में अपने आप को प्रस्तुत किया है जिससे आनेवाले दशकों तक उनका हिंदी साहित्य में जो योगदान रहेगा वो बेशक ही अद्वितीय, अविस्मरणीय रहेगा ।